30–6–67 ओमशांति रात्रीक्लास

बच्चे जानते हैं कि हम शिवबाबा के बच्चे हैं। भाई–बहन भी बनते हैं तब जबकि बाबा ब्रह्मा द्वारा एडॉप्ट करते हैं। इसको ही कहा जाता है मुखवंशावली। यहां पर कुखवंशावली की बात नहीं है। यह सभी है यहां का अनुभव। बाप पढ़ाते हैं। कृष्ण के लिए भी कहते हैं कि भगवान ने पढ़ाया था। हर एक मनुष्य की बायोग्राफी अलग2 होती है। मनुष्य नहीं जानते हैं। तुम बच्चे जानते हो कि कृष्ण की और परमात्मा की जीवन कहानी में रात–दिन का फर्क है। प्रदर्शनी में आते हैं ;परंतु इतना समय नहीं देते हैं कि जो पूरा समझकर जावें। चित्र बहुत ईजी है समझाने लिए। यह नई दुनियां ,यह पुरानी दुनियां। स्वर्ग में भारत ऐसा सुखी होता था। ड्रामा में तुम बच्चों के बिना और कोई नहीं जानते हैं। बच्चे ड्रामा को जानने पर समझते हैं कि हम 5000वर्ष के बाद आये हैं। फिर अब तुम चले जावेंगे सतयुग में। यह पार्ट फिर 5000वर्ष बाद रिपीट होगा। अभी तुम बच्चे जानते हो कि यह संगम है। बच्चों को निश्चय ही है कि हम जाते हैं बापदादा पास और हम विश्व का मालिक बनेंगे। भारत में ही 5हजार वर्ष पहले ल.ना. का राज्य था। फिर 84जन्म लेते2 जरूर तमोप्रधान अवस्था को पावेंगे। बच्चे जानते हैं कि हम और बाबा फिर 5हजार वर्ष बाद मिलेंगे। बच्चों का नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार ही पुरुषार्थ रहता है। लव भी सभी का एकरस नहीं होता है। जो बहुत दुःखी होते हैं उनको सहारा मिलता है तो बहुत लव रहता है। मंदिरों में तो शिवशंकर इकट्ठे कर लेते हैं। शंकर के आगे बैल दिखाते हैं। शिव के आगे नहीं दिखाते हैं। यह है सभी भक्तिमार्ग की बातें। भगवान एक ही रचता है। दुनियां भी एक ही है। शास्त्रों में तेा बहुत गपोड़े हैं। साइंस घमंडी तो समझते हैं कि एक2 सितारे में दुनियां है। यह भी कुदरत है। फायदा तो कुछ भी नहीं। आत्मा भी कुदरत है। सूर्य,चांद,सितारे भी कुदरत है। सभी इस मांडवे में हैं। यह है बेहद का ड्रामा। यह भी तुम्हीं बच्चे जानते हो। ऊपर में है शिवबाबा। बीच में हैं ब्र.वि.शं.। वो भी प्रवृत्ति मार्ग दिखाते हैं। सूक्ष्मवतन का अर्थ भी समझाया है। बाकी खेल तो यहां पर ही चलता है। बच्चों को बहुत खुशी होनी चाहिए। खुद खुश हो तो ही किसी को खुशी में ला सकते हैं। बच्चे जानते हैं कि हम अपनी राजधानी स्थापन कर रहे हैं। यह भी समझते हो कि बाबा ने प्रवेश किया है और हमको एडॉप्ट किया है। बच्चों का तो निश्चय हिलना ही नहीं चाहिए। याद नहीं करते हैं तो खुशी भी नहीं रहती है। कब भी कोई भी किसी बात में मूंझो तो डायरैक्ट बाबा से पूछ सकते हो। बच्चों को कहा जाता है कि याद करो तो सतोप्रधान बन जावेंगे। बाप कहते हैं मैं बच्चों के लिए सौगात ले आया हूँ। ऊंच ते ऊंच बाप हूँ। बच्चों के पास आया हूँ तो दूर से ही आया हूँ तो सौगात तो लेकर ही आउंगा ना बच्चों के लिए। बच्चे2 कहकर बात करते हैं तो आत्मा सुनती है। भक्तिमार्ग में बहुत भूलें हैं। दोष किसी का भी नहीं है। समझाया जाता है कि भक्ति क्या है ,ज्ञान क्या है। दोनों तो नहीं पकड़ सकेंगे। ज्ञान सदगति देता है। भक्ति तो दुर्गती देती है। तो फिर दुर्गति का धंधा ही कैसे करेंगे। बच्चे यह जानते हैं कि बाप आकर सभी का भला करते हैं। ड्रामा की भावी को भी तुम बच्चे जानते हो। तो सदैव खुशी रहनी चाहिए ना। कन्यायें कहेंगी कि हम बहुत सौभाग्यशाली हैं। हमको कोई बंधन नहीं है। स्त्री को पति नहीं है तो भी कोई बंधन नहीं है। यहां पर सभी एक दूसरे के द्रोही हैं। रावण का राज्य है ना। सभी एक–दो को देखो दुःख ही देने वाले हैं। नाम ही है दुःखधाम। वो था सुखधाम। भारतवासियों के लिए तो यह ज्ञान बहुत सहज है। हम आत्मा अपने घर शांतिधाम जाती हूँ इसलिए बाप को याद करना है। कोई और रास्ता तो बाप के पास जाने का है ही नहीं। बाप को तो यहां पर आना है पावन बनाने। बाबा कैसे बहलाते,खेलते,खाते,खिलाते,पिलाते सभी करते हैं। गुरूवार के दिन अपने हाथों से फल आदि खिलाते हैं। आगे तो हर एक को मुंह में गिट्टी खिलाते थे। तुम्हीं से खाउं,तुम्हीं से पिउं गाया हुआ है ना। दुनियां को क्या पता कि भगवान भी बच्चों को खिला रहे हैं। अच्छा,———मीठे2 बच्चों को बापदादा की गुडमार्निंग और नमस्ते।